काव्य खंड

पद (रैदास)

पाठ का परिचय

यहाँ रैदास के दो पद दिए गए हैं। पहले पद 'अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी' में रैदास ने ईश्वर के प्रति दास्यभाव भक्ति प्रकट की है। उन्होंने ईश्वर से अपनी तुलना करते हुए अपने आराध्य को सब प्रकार से श्रेष्ठ और स्वयं को उससे हीन दिखाया है, लेकिन फिर भी दोनों का अभिन्न संबंध है। रैदास के प्रभु कहीं बाहर नहीं, बल्कि उनके हृदय में सदा विराजमान रहते हैं।

दूसरे पद में भगवान की अपार उदारता, कृपा और उनके समदर्शी स्वभाव का वर्णन किया है। रैदास के विचार से भगवान ही एकमात्र गरीब नवाज हैं, जिन्होंने निम्न कुल के भक्तों को भी सहज भाव से अपनाया और उन्हें सम्माननीय स्थान दिलाया। इस पद में कवि ने तत्कालीन सामाजिक यथार्थ को भी उजागर किया है।

पदों का भावार्थ

1. **अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।**
   प्रभु जी, तुम चंवन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।
   प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
   प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
   प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
   प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

   भावार्थ—रैदास कवि कहते हैं, हे प्रभु! मुझे राम नाम की रट लग गई है, अब वह कभी नहीं छूटेगी। मेरा और आपका संबंध तो अटूट है। हे प्रभु! आप चंदन हैं तो मैं पानी हूँ। जिस प्रकार पानी में चंदन घुल जाने से पानी सुगंधित हो जाता है, उसी प्रकार मेरे रोम-रोम में आपका प्रेम बस गया है। आप बादल और वन हैं, मैं मोर हूँ। जैसे बादल और वन मोर की प्रसन्नता के आधार हैं, उसी प्रकार आप मेरी प्रसन्नता (आनंद) के आधार हैं। जिस प्रकार चाँद को चकोर टकटकी लगाए देखता रहता है, उसी प्रकार आपके प्रति मेरी भक्ति अनन्य है अर्थात् आप चाँद हैं, मैं चकोर हूँ। जिस प्रकार बाती में दीपक के तेल की ही ज्योति होती है, उसी प्रकार मेरे अंदर आपका ही अंश चेतनस्वरूप है। अर्थात् आप दीपक हैं, मैं बाती हूँ। आप मोती हैं, मैं धागा हूँ। जिस प्रकार मोतियों से युक्त होकर एक साधारण धागा कंठ का हार बन जाता है, उसी प्रकार आपकी भक्ति से युक्त होकर मैं लोगों का प्रिय बन गया हूँ। हे प्रभु! मेरा और आपका संबंध ऐसा है, जैसे सोने में सुहागा अर्थात् जिस प्रकार सोने में सुहागा मिलने से उसकी चमक बढ़ जाती है, उसी प्रकार आपकी भक्ति पाकर मेरा महत्त्व बढ़ गया है। रैदास कहते हैं— हे प्रभु! मैं आपकी दास्यभाव की भक्ति करना चाहता हूँ; क्योंकि आप मेरे स्वामी हैं और मैं आपका दास हूँ।

2. **ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।**
   गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।
   जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।
   नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।।
   नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।
   कहि रविदास सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै।।

   भावार्थ—प्रस्तुत पद में कवि ने भगवान के दीनदयालु स्वभाव का वर्णन किया है। रैदास कहते हैं कि हे मेरे प्रिय प्रभु! जैसी कृपा आपने मुझ पर की है, वैसी कोई भी किसी पर नहीं कर सकता। हे मेरे स्वामी! आप गरीबों, दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हो। आप जिसे चाहो उसके सिर पर छत्र धारण करा सकते हो। जिनके छूने से यह संसार स्वयं को अपवित्र समझता है, उन अछूत समझे जाने वाले निम्नवर्ग के लोगों पर आप ही द्रवित होते हैं। हे गोविंद! आप नीच व्यक्ति को भी ऊँचा स्थान प्रदान कर देते हैं और किसी से नहीं डरते। निम्न लोगों पर आपकी इसी कृपा के कारण नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे निम्नवर्ग के संतों का उद्धार हो गया। रैदास कवि कहते हैं कि हे संतो! सुनो, मेरे हरि सब प्रकार से समर्थ हैं, वे कुछ भी कर सकते हैं।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

1. कवि से अब क्या नहीं छूटेगी–
(क) नशे की आदत
(ख) कविता लिखने की आदत
(ग) राम-नाम की रट
(घ) घूमने-फिरने की आदत।

2. यदि ईश्वर चंदन है तो कवि है–
(क) सुगंध (ख) शीतलता
(ग) सर्प (घ) पानी।

3. चकोर किसको देखता रहता है–
(क) चाँद को
(ख) तारों को
(ग) सूर्य को
(घ) उपर्युक्त में से किसी को नहीं।

4. यदि प्रभु दीपक है तो कवि है–
(क) तेल (ख) प्रकाश
(ग) बत्ती (घ) लौ।

5. 'जाकी जोति बरै दिन राती' में अलंकार है–
(क) यमक (ख) उपमा
(ग) अनुप्रास (घ) रूपक।

उत्तर– 1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. (ग) 5. (ग)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(2) ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।
नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।।
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै।।

1. **लाल यहाँ किसे कहा गया है–**
(क) ईश्वर को (ख) पुत्र को
(ग) पिता को (घ) गुरु को।

2. **जिसको संसार अछूत मानता है, उस पर कौन द्रवित होता है–**
(क) राजा (ख) गुरु
(ग) ईश्वर (घ) इनमें कोई नहीं।

3. **रैदास जी के गोविंद क्या करते हैं–**
(क) उच्च को नीच (ख) नीच को उच्च
(ग) शत्रु को मित्र (घ) मित्र को शत्रु।

4. **प्रभु की निम्न लोगों पर कृपा के कारण किसका उद्धार हो गया–**
(क) नामदेव का (ख) कबीर का
(ग) सधना का (घ) ये सभी।

5. **रैदास जी के हरि सब कुछ क्यों कर सकते हैं–**
(क) क्योंकि वे स्वतंत्र हैं (ख) क्योंकि वे राजा हैं
(ग) क्योंकि वे सर्वसमर्थ हैं (घ) क्योंकि वे सर्वव्यापक हैं।

उत्तर– 1. (क) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **प्रस्तुत पदों का रचयिता कौन है–**
(क) कबीरदास (ख) रहीमदास
(ग) रैदास (घ) नामदेव।

2. **रैदास जी का जन्म कब हुआ–**
(क) सन् 1388 में (ख) सन् 1340 में
(ग) सन् 1470 में (घ) सन् 1520 में।

3. **पहले पद में रैदास ने अपनी तुलना किससे की है–**
(क) राजा से (ख) भक्त से
(ग) अपने आराध्य से (घ) एक अनाथ से।

4. **रैदास जी का अपने प्रभु से कैसा रिश्ता है–**
(क) पिता और पुत्र का (ख) गुरु और शिष्य का
(ग) दानी और याचक का (घ) स्वामी और दास का।

5. **रैदास जी ने स्वयं को चकोर क्यों माना है–**
(क) क्योंकि वह चाँद की लालसा में रातभर तड़पता है
(ख) क्योंकि वह चाँदनी पीकर ही जीवित रहता है
(ग) क्योंकि वह चाँद की किरणों से ऊर्जा पाता है
(घ) क्योंकि वह पूर्णिमा में ही बाहर निकलता है।

6. **कवि ने चाँद का संबंध किसके साथ बताया है–**
(क) दीपक के साथ (ख) चाँदनी के साथ
(ग) चकोर के साथ (घ) मोर के साथ।

7. **ईश्वर के सिर छत्र धरा होने से आशय है–**
(क) ईश्वर की पहचान छत्र है
(ख) ईश्वर सुंदर हैं
(ग) ईश्वर सर्वव्यापक हैं
(घ) वास्तव में ईश्वर ही संसार के स्वामी हैं।

8. **कवि ने समाज में फैली किस समस्या की ओर संकेत किया है–**
(क) सती-प्रथा (ख) विधवा-विवाह
(ग) छुआछूत (घ) अशिक्षा।

9. **रैदास जी प्रभु को किसलिए धन्यवाद दे रहे हैं–**
(क) प्रभु द्वारा अपना लिए जाने के कारण
(ख) प्रभु द्वारा मनोकामना पूर्ण करने के कारण
(ग) प्रभु द्वारा राजाओं जैसा सम्मान देने के कारण
(घ) प्रभु द्वारा ज्ञान प्रदान करने के कारण।

10. **रैदास के स्वामी की क्या विशेषता है–**
(क) वह नीचे-से-नीचे व्यक्ति को ऊँचा उठाते हैं।
(ख) वह ऊँचे आसन पर बैठते हैं।
(ग) वह छुआछूत को मानते हैं।
(घ) उपर्युक्त सभी।

11. **दिन रात किसकी ज्योति जलती है–**
(क) दीपक की (ख) बाती की
(ग) ईश्वर की (घ) कवि की।

12. **ईश्वर घन है तो रैदास क्या है–**
(क) चकोर (ख) पानी
(ग) चंदन (घ) मोर।

13. **रैदास चंदन किसको मानते हैं–**
(क) स्वयं को (ख) परमात्मा को
(ग) चंदन के वृक्ष को (घ) कीमती वस्तुओं को।

14. **कवि रैदास को किसके नाम की रट लग गई है–**
(क) अपनी प्रियतमा के
(ख) चंदा के नाम की
(ग) परमात्मा के नाम की
(घ) गुरु के नाम की।

15. **रैदास जी के पदों की भाषा कौन-सी है–**
(क) खड़ी बोली (ख) अवधी
(ग) सरल ब्रजभाषा (घ) सधुक्कड़ी।

16. **कवि के अनुसार उनके प्रभु ने सहज-भाव से किन भक्तों को अपनाया है–**
(क) उच्चकुल के भक्तों को
(ख) निम्नकुल के भक्तों को
(ग) निर्गुण भक्ति करने वाले भक्तों को
(घ) सगुण भक्ति करने वाले भक्तों को।

17. **प्रभु मोती हैं तो रैदास जी हैं–**
(क) माला (ख) पुष्प
(ग) धागा (घ) चमक।

18. **रैदास जी कैसे कवि हैं–**
(क) वैरागी कवि (ख) संत कवि
(ग) शृंगारिक कवि (घ) प्रकृति प्रेमी कवि।

19. **रैदास जी के अंग-अंग में क्या समाया है–**
(क) मिठास (ख) रंग
(ग) ईश्वर भक्ति की सुगंध (घ) लालच।

20. **रैदास जी ने अपने स्वामी को किस नाम से पुकारा है–**
(क) गरीब निवाजु (ख) गुसईआ
(ग) गोबिंदु (घ) ये सभी।

उत्तर– 1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (क) 6. (ग) 7. (घ) 8. (ग) 9. (ग) 10. (क) 11. (ग) 12. (घ) 13. (ख) 14. (ग) 15. (ग) 16. (ख) 17. (ग) 18. (ख) 19. (ग) 20. (घ)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : ईश्वर के प्रति रैदास की भक्ति कैसी है?

उत्तर : रैदास ईश्वर के अनन्य भक्त हैं। उनकी भक्ति दास्यभाव की है। ईश्वर उनके स्वामी हैं और वे ईश्वर के दास हैं।

प्रश्न 2 : रैदास ईश्वर को मोती और स्वयं को धागा क्यों मानते हैं?

उत्तर : ईश्वर के साथ अपना अटूट संबंध बताने के लिए रैदास ईश्वर को मोती और स्वयं को धागा मानते हैं; क्योंकि मोती और धागे का संबंध अटूट होता है। मोतियों के कारण ही धागा हार कहलाने का सम्मान पाता है।

प्रश्न 3 : ज्योति के दिन-रात जलने से रैदास का क्या आशय है?

उत्तर : 'ज्योति' भक्ति और ज्ञान की प्रतीक है। ज्योति के दिन-रात जलने से रैदास का आशय यह है कि उसके मन में ईश्वर की भक्ति की लौ निरंतर जलती रहे, जिससे प्रकाशरूपी ज्ञान से उसका हृदय आलोकित हो रहा है।

प्रश्न 4 : पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीज़ों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

उत्तर : पहले पद में भगवान और भक्त की निम्नलिखित चीज़ों से तुलना की गई है–

भगवान की तुलना–चंदन, चाँद, घन-वन, दीपक, मोती, सुहागा, स्वामी।

भक्त की तुलना–पानी, चकोर, मोर, बाती, धागा, सोना, दास।

प्रश्न 5 : रैदास को क्या रट लग गई है?

उत्तर : कवि रैदास को राम-नाम जपने की रट लग गई है, जो अब किसी भी प्रकार छूटने वाली नहीं है।

प्रश्न 6 : रैदास ने अपने पद में 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : दूसरे पद में कवि ने गरीब निवाजु भगवान को कहा है। इस शब्द का अर्थ है दीन-दुःखियों पर दया करने वाला। संसार में दीन-दुःखियों की सभी लोग उपेक्षा करते हैं, लेकिन भगवान हमेशा उन पर दया करते हैं। इसका प्रमाण यह है कि उन्होंने रैदास जैसे गरीब व्यक्ति को भी संत शिरोमणि बना दिया है।

प्रश्न 7 : रैदास के अंग-अंग में क्या समा गया है?

उत्तर : रैदास के अंग-अंग में भगवान की भक्ति और प्रेम की सुंगध इस प्रकार समा गई है, जैसे पानी में चंदन की सुगंध समा जाती है।

प्रश्न 8 : 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' – पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति का भाव यह है कि हे भगवान! आप बहुत दयालु और समदर्शी हैं। यह सारा संसार जिसे अछूत समझता है, उस पर आप ही द्रवित होते हैं अर्थात् आप की दृष्टि में कोई अछूत नहीं है।

प्रश्न 9 : रैदास ने भगवान को घन-बन और स्वयं को मोर क्यों कहा है?

उत्तर : रैदास ने भगवान को घन-बन और स्वयं को मोर इसलिए कहा है; क्योंकि जिस प्रकार बादलों और हरे-भरे वन को देखकर मोर प्रसन्नता से नृत्य करने लगता है, उसी प्रकार रैदास को केवल ईश्वर की भक्ति में ही आनंद आता है।

प्रश्न 10 : रैदास के लाल की क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर : रैदास के लाल (ईश्वर) गरीब निवाजु, दीनदयाल और समदर्शी हैं। वे निम्न जाति के लोगों को भी ऊँचा स्थान प्रदान करते हैं। वे किसी से डरते नहीं।

प्रश्न 11 : रैदास ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

उत्तर : रैदास ने अपने स्वामी को लाल, गरीब निवाजु, गुसईआ, गोविंदु, हरिजीउ आदि नामों से पुकारा है।

प्रश्न 12 : 'नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै' –पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव**–इसका भाव यह है कि हमारे समाज में ऊँच-नीच का बहुत अधिक भेदभाव है। सहृदय लोग भी समाज के डर से निम्न और अछूत माने जाने वाले लोगों को ऊपर उठाने का साहस नहीं कर पाते। लेकिन ईश्वर समदर्शी और दयालु हैं। वे नीच और अछूत व्यक्ति को भी ऊँचा स्थान प्रदान कर देते हैं और ऐसा करते हुए उन्हें किसी का भय नहीं होता।

प्रश्न 13 : अनेक साधु-संतों का उल्लेख करके रैदास क्या स्पष्ट करना चाहते हैं?

उत्तर : रैदास ने अपने पद में नामदेव, कबीर, सधना, सैनु आदि संतों के नामों का उल्लेख किया है। ये सभी समाज में निम्न कही जाने वाली जातियों से थे। नामदेव-छीपी, कबीर-जुलाहा, सधना-कसाई और सैनु-नाई थे। ईश्वर भक्ति से इन्होंने समाज में उच्च जाति के लोगों से भी अधिक सम्मान प्राप्त किया। अतः इनके नामों का उल्लेख कर रैदास यही बताना चाहते हैं कि ईश्वर-भक्ति नीच को भी उच्च बना देती है।

प्रश्न 14 : 'जाकी अँग-अँग बास समानी' –पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव**–इस पंक्ति का भाव यह है कि जिस प्रकार पानी में चंदन घुल जाने पर उसकी बूँद-बूँद सुगंधित हो जाती है, उसी प्रकार हृदय में ईश्वर की प्रेम-भक्ति बस जाने पर भक्त का अंग-अंग उससे सुवासित हो जाता है।

प्रश्न 15 : 'जाकी जोति बरै दिन राती' –भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव**–इसका भाव यह है कि जिस प्रकार दीपक के तेल (स्नेह) से उसकी बत्ती दिन-रात जलती रहती है, उसी प्रकार भक्त रैदास के हृदय में भी उसके प्रभु का प्रेम भरा है, जिससे दिन-रात भक्ति की लौ प्रज्वलित हो रही है।

प्रश्न 16 : छुआछूत को लेकर रैदास ने क्या कहा है?

उत्तर : छुआछूत को लेकर रैदास ने कहा है कि ईश्वर छुआछूत नहीं मानते। वे समाज में निम्न और अछूत समझे जाने वाले को भी शरण में आने पर वैसा ही उच्चपद देते हैं, जैसा उच्चकुल वालों को प्रदान करते हैं।

प्रश्न 17 : 'जाकी छोति जगत कउ लागै' – पंक्ति में रैदास ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर : इस पंक्ति में कवि रैदास ने सामाजिक व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है। उनके अनुसार हमारे समाज ने कुछ वर्गों को अछूत माना हुआ है, जिन्हें छूने मात्र से दूसरे लोग अपवित्र हो जाते हैं। रैदास कहते हैं कि ईश्वर ने अछूत समझे जाने वाले निम्नवर्ग के लोगों का उद्धार किया और उन्हें ऊँचा स्थान प्रदान किया। ईश्वर के लिए संसार में कोई भी नीच या अछूत नहीं है।

प्रश्न 18 : 'जैसे सोनहिं मिलत सुहागा' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा रैदास जीवन में ईश्वर-भक्ति के पड़ने वाले प्रभाव को बताना चाहते हैं। जैसे सोने में सुहागा मिलने से सोने की चमक और अधिक बढ़ जाती है उसी प्रकार जब जीवन में ईश्वर भक्ति आ जाती है तो जीवन कुंदन बन जाता है। रैदास का जीवन ईश्वर की भक्ति से ऐसे चमक उठा है, जैसे सोना सुहागे से चमक उठता है।

प्रश्न 19 : चाँद और चकोर के संबंध से कवि क्या स्पष्ट करना चाहता है?

उत्तर : चाँद और चकोर के संबंध से रैदास भगवान के प्रति अपनी अनन्य भाव की भक्ति को प्रकट करना चाहते हैं। जिस प्रकार चकोर को चाँद अतिप्रिय होता है वह एकटक उसे ही निहारता रहता है, उसी प्रकार रैदास भगवान के अनन्य भक्त हैं। भगवान के अलावा उन्हें अन्य किसी से कोई सरोकार नहीं है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 20 : भगवान ने किन लोगों का उद्धार किया है?

उत्तर : भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु आदि भक्तों का उद्धार किया। ये सभी निम्न जाति के थे।

प्रश्न 21 : 'तुम दीपक हम बाती'–पंक्ति में जो आध्यात्मिक भाव निहित हैं, उसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति में आत्मा-परमात्मा संबंधी दार्शनिक भाव निहित है। इसका भाव यह है कि जिस प्रकार बाती में दीपक का तेल होता है और जब तक वह तेल होता है, तभी तक बाती जलती है। उसी प्रकार आत्मा-परमात्मा का अंश है। जब तक वह शरीर में स्थित रहती है, तब तक ही मनुष्य जीवित रहता है। जब जीवात्मा परमात्मा में वापस चली जाती है तो शरीर निस्तेज हो जाता है; जैसे तेलरहित बाती बुझ जाती है। इस प्रकार कवि रैदास ने दीपक-बाती के माध्यम से भारतीय दर्शन की आत्मा-परमात्मा संबंधी अवधारणा को बहुत सरल और सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 22 : रैदास कवि की राम-नाम की रट क्यों नहीं छूट सकती?

उत्तर : रट लगने का अर्थ है–सच्चा प्रेम होना। रैदास जी को राम-नाम से सच्चा प्रेम हो गया है। सच्चा प्रेम-संबंध अटूट होता है। यह प्रेम-संबंध कोई साधारण संबंध नहीं है। यह संबंध ऐसा है; जैसे–चंदन और पानी का, घन-बन और मोर का, चाँद और चकोर का, दीपक और बाती का, मोती और धागे का, सोने और सुहागे का, स्वामी और दास का। इसीलिए रैदास जी की राम-नाम की रट अब छूट नहीं सकती है।

प्रश्न 23 : रैदास के इन पदों का केंद्रीयभाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : रैदास के इन पदों में ईश्वर की सच्ची भक्ति के दर्शन होते हैं। उनकी भक्ति दास्यभाव की है। प्रथम पद में उन्होंने ईश्वर के प्रति अपनी अनन्य-भक्ति और समर्पणभाव को प्रदर्शित किया है। अनेक उपमानों द्वारा उन्होंने अपना और अपने आराध्य देव के अटूट संबंध को दर्शाया है। दूसरे पद में वे प्रभु के माध्यम से समाज में व्याप्त ऊँच-नीच और छुआछूत की भावना को समाप्त करने की माँग करते हैं। उन्होंने बताया है कि समाज में ऊँच-नीच का बँटवारा मानवकृत है, ईश्वर तो समदर्शी है। वह ऊँच-नीच को नहीं मानता। रैदास के दोनों पद भक्ति एवं प्रेम के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं।

प्रश्न 24 : रैदास ईश्वर भक्तों के लिए क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर : अपने पदों के माध्यम से रैदास यह संदेश देना चाहते हैं कि जब तक राम-नाम की सच्ची रट नहीं लगती, तब तक ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। अभिमानरहित होकर अपने आराध्य से ऐसा संबंध स्थापित करना चाहिए जैसा चंदन-पानी, घन-बन-मोर, चाँद-चकोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, सोना-सुहागा और स्वामी-सेवक का होता है। वे यह भी संदेश देना चाहते हैं कि निम्नवर्ग का होने से कोई ईश्वर की कृपा से वंचित नहीं हो जाता; क्योंकि ईश्वर समदर्शी हैं। वे ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं करते। उन्होंने निम्नवर्ग के अनेक संतों; जैसे–नामदेव, कबीर, त्रिलोचन आदि का उद्धार किया है। अतः सच्चे मन से ईश्वर का भजन करना चाहिए।

प्रश्न 25 : रैदास ने तत्कालीन समाज की क्या विषमता बताई है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : रैदास ने अपने दूसरे पद में तत्कालीन समाज की भेदभावपूर्ण स्थिति पर प्रकाश डाला है। उस समय समाज में जाति-पाँति, छुआछूत और ऊँच-नीच का भेदभाव व्याप्त था। रैदास कहते हैं कि वह ऐसे निम्न वर्ग के व्यक्ति हैं, जिसे लोग अछूत मानते हैं, लेकिन भगवान ने उन पर कृपा की है। वे निम्नवर्ग के व्यक्ति को भी ऊँचा स्थान प्रदान करते हैं और इसमें उन्हें किसी का भी भय नहीं है। भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे निम्नवर्ग के संतों का उद्धार किया है। इस प्रकार ईश्वर के समदर्शी स्वभाव का वर्णन करते हुए रैदास ने अपने समय में समाज में व्याप्त ऊँच-नीच और छुआछूत की सामाजिक बुराई को भी उजागर कर दिया है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

1. **कवि से अब क्या नहीं छूटेगी–**
   (क) नशे की आदत
   (ख) कविता लिखने की आदत
   (ग) राम-नाम की रट
   (घ) घूमने-फिरने की आदत।
2. **यदि ईश्वर चंदन है तो कवि है–**
   (क) सुगंध (ख) शीतलता
   (ग) सर्प (घ) पानी।
3. **चकोर किसको देखता रहता है–**
   (क) चाँद को (ख) तारों को
   (ग) सूर्य को (घ) इनमें से किसी को नहीं।
4. **यदि प्रभु दीपक है तो कवि है–**
   (क) तेल (ख) प्रकाश
   (ग) बत्ती (घ) लौ।
5. **'जाकी जोति बरै दिन राती' में अलंकार है–**
   (क) यमक (ख) उपमा
   (ग) अनुप्रास (घ) रूपक।

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

6. **कवि रैदास को किसके नाम की रट लग गई है–**
   (क) अपनी प्रियतमा के (ख) चंदा के नाम की
   (ग) परमात्मा के नाम की (घ) गुरु के नाम की।
7. **रैदास जी का जन्म कब हुआ–**
   (क) सन् 1388 में (ख) सन् 1340 में
   (ग) सन् 1470 में (घ) सन् 1520 में।

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

8. **रैदास को क्या रट लग गई है?**
9. **ईश्वर के प्रति रैदास की भक्ति कैसी है?**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in